फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

फिलिस्ती एक ऐसा लोग समूह थे जो प्राचीन कनान देश में रहते थे, और वे पुराने नियम में इस्राएल के सबसे ज़िद्दी दुश्मनों में से थे। वे वहाँ के मूल निवासी नहीं थे, बल्कि इस्राएलियों के मिस्र से आने से पहले वहाँ बस गए थे।

न्यायाधीश 2:1-3 में, परमेश्वर ने इस्राएलियों को आदेश दिया कि वे कनान के सभी निवासियों को बाहर निकाल दें और उनके मूर्तिपूजक देवताओं को नष्ट कर दें। यह परमेश्वर का इस्राएल के साथ वाचा का हिस्सा था, जिसमें उन्होंने वादा किया था कि अगर वे उसकी आज्ञाओं के प्रति वफादार रहेंगे तो वह उन्हें कनान की भूमि देगा। लेकिन इस्राएलियों ने इस आदेश का पूरी तरह पालन नहीं किया, बल्कि कुछ स्थानीय समूहों जैसे कि फिलिस्तियों के साथ समझौते किए और उन्हें भूमि में रहने दिया।

न्यायाधीश 1:27-33 में इस्राएल की अवज्ञा को दर्शाया गया है, जहां वे पूरी तरह से भूमि पर अधिकार नहीं कर सके और इन समूहों को रहने दिया, जिससे अंततः संघर्षों का सिलसिला शुरू हुआ।

फिलिस्ती विशेष रूप से मुश्किल थे। 1 शमूएल 4:2-11 में इस्राएल और फिलिस्तियों के बीच पहला बड़ा संघर्ष दिखाया गया है, जिसमें इस्राएलियों को पराजय मिली और क़रीब की क़वायद खो गई। समय के साथ, परमेश्वर ने समसन और शमूएल जैसे नेताओं को उठाया ताकि वे फिलिस्तियों के अत्याचार से इस्राएल को छुड़ाएं। लेकिन फिलिस्तियों का प्रभाव गहरा था और उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के खिलाफ प्रतिरोध जारी

फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

रखा।

आज “फिलिस्ती” शब्द का विकास “फिलिस्तीनी” में हुआ है, जो ग्रीकों द्वारा इस क्षेत्र की विजय के बाद दिया गया था। यह नाम अब मध्य पूर्व के एक समूह के लिए इस्तेमाल होता है, जो उस क्षेत्र के ऐतिहासिक संघर्ष से जुड़ा है।

फिलिस्ती किस देश से थे?

हालांकि फिलिस्ती आधुनिक अर्थों में एक एकीकृत राष्ट्र नहीं थे, वे प्राचीन कनान के दक्षिण पश्चिमी हिस्से में पाँच मुख्य नगरों पर शासन करते थे, जो भूमध्य सागर के किनारे थे। ये नगर थे गाजा, अशदोद, गाथ, अशकेलोन, और एकरन, जिन्हें ‘पेंटापोलिस’ (पाँच नगरों का गठबंधन) कहा जाता था। ये नगर समुद्र तट के व्यापार मार्गों को नियंत्रित करने के लिए रणनीतिक रूप से स्थित थे।

हर नगर का एक स्वामी या राजा था, जैसा कि न्यायाधीश 3:3 में ‘फिलिस्तियों के पाँच स्वामियों’ का उल्लेख है। फिलिस्ती लोहे के उपकरण और हथियारों के उपयोग के लिए जाने जाते थे, जो उन्हें इस्राएल के लिए एक मजबूत विरोधी बनाता था, जो उस समय कांसे के हथियारों का उपयोग कर रहा था (1 शमूएल 13:19-22 देखें)।

फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

हम फिलिस्तियों से क्या सीख सकते हैं?

फिलिस्तियों की कहानी हमें कई आध्यात्मिक शिक्षा देती है:

अवज्ञा के परिणाम:
फिलिस्तियों के साथ संघर्ष सीधे इस्राएल के परमेश्वर के आदेश का पालन न करने से उत्पन्न हुआ। 5 मोजे 7:1-5 में परमेश्वर ने इस्राएल को चेतावनी दी कि वे कनानी समूहों को पूरी तरह न छोड़ें क्योंकि वे उनके लिए जाल बनेंगे। परमेश्वर के आदेश का आंशिक पालन लंबी अवधि के संकट का कारण बना। इस्राएल और फिलिस्तियों के बीच संघर्ष चेतावनी है कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति आंशिक आज्ञाकारिता दूरगामी परिणाम ला सकती है।

परमेश्वर की वफादारी:
जब इस्राएल वफादार नहीं था, तब भी परमेश्वर वफादार रहा। 1 शमूएल 7:9-11 में इस्राएलियों ने पश्चाताप किया और परमेश्वर से पुकारा, तब परमेश्वर ने शमूएल के माध्यम से फिलिस्तियों को परास्त किया। यह दर्शाता है कि जब लोग वापस परमेश्वर की ओर लौटते हैं, तो परमेश्वर उन्हें छुड़ाने को तैयार रहता है।

फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

परमेश्वर की मुक्ति की शक्ति:
समसन का जीवन (न्यायाधीश 13-16) दिखाता है कि परमेश्वर अपूर्ण इंसानों का भी उपयोग अपने उद्देश्य पूरे करने के लिए कर सकता है। समसन की कमजोरियाँ, जैसे फिलिस्ती महिलाओं के प्रति उसकी झुकाव और उसकी लापरवाही, उसे परमेश्वर के उद्देश्य में बाधा नहीं बन सकीं। यह कहानी सिखाती है कि मानव कमजोरियाँ परमेश्वर की योजना को नहीं रोक सकतीं।

परमेश्वर के आदेशों का पालन आवश्यक है:
फिलिस्तियों की कहानी हमें यह याद दिलाती है कि परमेश्वर के आदेशों का पालन करना कितना महत्वपूर्ण है। यीशु ने स्वयं मत्ती 7:24-27 में कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवन को उनके शिक्षाओं की मजबूत नींव पर बनाए, वह बुद्धिमान है, जैसे इस्राएल को परमेश्वर के आदेशों पर अपना राष्ट्र बनाना था। परमेश्वर की आज्ञाओं को नजरअंदाज करना विनाश का कारण बन सकता है।

मुक्ति: परमेश्वर का सर्वोच्च आदेश

आज मानवता के लिए परमेश्वर का सबसे महत्वपूर्ण आदेश है उद्धार का आह्वान। यीशु ने कहा:
यूहन्ना 14:6
“यीशु ने उससे कहा, मैं मार्ग और सत्य और जीवन हूँ; मुझ से बिना कोई

फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

पिता के पास नहीं आता।”

यह सबसे महत्वपूर्ण आज्ञा है जिसे हमें मानना चाहिए। जिस तरह इस्राएल को अपने शत्रुओं से मुक्ति पाने के लिए परमेश्वर के आदेशों का पालन करना था, उसी तरह हमें यीशु मसीह के द्वारा उद्धार के लिए परमेश्वर के आदेश का पालन करना है।

यदि आप अपने उद्धार को लेकर अनिश्चित हैं, तो यह सोचें:
2 कुरिन्थियों 6:2
“मैं तुम्हें बताता हूँ, अभी अनुग्रह का समय है, अभी उद्धार का दिन है।”

यह वह समय है जब आपको परमेश्वर से शांति बनानी चाहिए, क्योंकि मसीह के आने का समय निकट है, जैसा कि 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17 में कहा गया है। समय के संकेत स्पष्ट हैं, और हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं, जैसा कि मत्ती 24 में बताया गया है।

मसीह कभी भी वापस आ सकते हैं, और हमें तैयार रहना चाहिए। उद्धार केवल व्यक्तिगत मामला नहीं है, यह परमेश्वर के शाश्वत राज्य का हिस्सा बनने का आह्वान है।

निष्कर्ष

फिलिस्ती कौन थे?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

जब हम फिलिस्तियों के इतिहास पर विचार करते हैं, तो याद रखें कि परमेश्वर के आदेश हल्के में नहीं लेने चाहिए। अवज्ञा के दूरगामी परिणाम होते हैं, लेकिन परमेश्वर दयालु और विश्वसनीय है, जो हर उस व्यक्ति को बचाने को तैयार है जो उसकी ओर लौटता है।

यदि आपने अभी तक मसीह को स्वीकार नहीं किया है, तो देर न करें! प्रेरितों के काम 4:12
“और कोई भी उद्धार में नहीं है; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को दिया गया कोई अन्य नाम नहीं है, जिससे हमें बचाया जाना चाहिए।”

आज ही परमेश्वर का उद्धार खोजिए, क्योंकि हम अंतिम दिनों में हैं और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश का अवसर अभी है।

ईश्वर आपका बहुत आशीर्वाद दे।

Share on:
WhatsApp